International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13 Issue 1, January 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महाभारताख्यानाधृत' द्रोपदी' खण्डकाव्य में आधुनिकता बोध

संजय कुमार

(गैस्ट फैकल्टी)

राजकीय महाविद्यालय रेवतड़ा. जालौर फैकल्टी

द्वापर युगीन महाभारत मे न केवल हिन्दी अधिक अपितु अनेक भाषाओं के साहित्य को प्रभावित किया है। यह उल्लेखनीय तथ्य है कि बीसवी शताब्दी से पूर्व महाभारत की कथावस्तु पर आधारित जो भी काव्य कृतियाँ प्रकाशित हुई उनमें प्रायः इतिवृत्तात्मकता के ही दर्शन होते है किन्तु आधुनिक युग में कवियों ने नवीन उद्भावनाओं द्वारा महाभारतीय वस्तु को आधुनिक युग परिप्रेक्ष्य एवं आधुनिक जीवन दृष्टि के आलोक मे जांचा परखा है महाभारत भारतीय संस्कृति का आधार ग्रंथ है। अतः जब हमारे सांस्कृतिक परिवेश में परिवर्तन परिलक्षित होने लगा तो कवियों की युग चेतना ने महाभारतीय वस्तु की नवीन व्याखा प्रस्तुत कर अतीत के द्वारा वर्तमान को संदेश प्रदान किया।

कवि तथा कलाकार समाज का सबसे अधिक उदग्र चेतना का प्राणी होता है वह प्रचीन साहित्य एवं साहित्य एवं संस्कृति की नवीन व्याखा कर उसे युगीन परिप्रेक्ष्य मे प्रस्तुत करता है कवि प्राचीन आख्यान आधारित ग्रंथो प्रवन्ध काव्यों, खंड काव्यों को पढकर इसे आधुनिक बोध प्रदान करता है आज का साहित्यकार यह अनुभव कर रहा है कि आज समस्त साहित्य में संवेदनात्मक एवं बोधात्मक स्तर पर परिवर्तन आ गया है। जिससे साहित्य के समस्त अंग प्रभावित है बोध की इस परिवर्तित स्थिति को आधुनिक साहित्यकार नवीन भाव बोध कहते है। 1

आधुनिक शब्द समय– सापेक्षता एवं मूल्य सापेक्षता गर्भित है योग बोध परक विशिष्ट जीवनदृष्टि को आधुनिक जीवनदृष्टि कर सह है जो की युगीन परिवेश में स्वयं को नवीनीकृत करती चलती है आधुनिक शब्द का प्रयोग डा. नगेन्द्र ने भी तीन अर्थों में किया है एक अर्थ समय सापेक्ष है जिसके अनुसार आधुनिक एवं विशेष कालावधि का घोतक है। दूसरा अर्थ विचार परक है जिसके अनुसार आधुनिक एक विशेष दृष्टिकोण है और तीसरे अर्थ मे आज दें सीमित सन्दर्भ में एक अर्थ समसामयिक भी है।''2

''समय सापेक्षता की दृष्टि में आधुनिक चिन्तन की पूर्ण प्रतीति 19 वी शताब्दी से होती है, जिसमे भारतीय चिंतन में आमूल परिवर्तन उपस्थित कर दिया। आधुनिक एककालिक आयाम है और आधुनिकता एक विशेष दृष्टिकोण– जो मानव प्रगति व नवीन परिवेश को स्वीकार करती चलती है। यह एक गत्यात्मक व सहज प्रवाहमान प्रतिक्रिया है। 3

आधुनिकता बाह्य आरोपित वस्तु न होकर देशकाल में अनुभूत अभिव्यक्ति में निरूपित होती है। यह पुरानी जर्जरित मान्यताओं के स्थान पर नई स्थापनाएँ प्रतिष्ठित करती है। अतः सामाजिक स्तर पर हमे अनेक विद्रोहों का भी सामना करना पड़ सकता है।

कुछ लोग आधुनिकता की पुरातन निरपेक्ष व्याख्या करते हैं तो कुछ इसे प्राचीन सापेक्ष मानते हैं। आधुनिकता अतीत नहीं हो सकती, भले ही वह नवीन परिस्थितियों की प्रतिक्रिया की उपज है लेकिन उसमे रूप में अतीत ही स्फुरित रहता है डा. जगदीश गुप्त ने आधुनिकता के पुरातन सापेक्षता पर विचार, व्यक्त करते हुए लिखा है? आधुनिकता का अर्थ मेरे निकट पुरातन को गाली देना नहीं वरन् सारगृहणी तत्व दृष्टि के साथ विगत सांस्कृतिक समृद्धि को आत्मसात करते हुए मानव की प्रगति वर्तमान नियति एवं उसके भावों विकास के प्रति अपने दायित्व को विशिष्ट एवं सक्रिय अनुभव करना है।''4

आधुनिकता बोध के स्वरूप और पद्धति का परिज्ञान आधुनिक हिन्दी लेखक और समीक्षक के लिए आवश्यक है। वेबस्टर के शब्दकोश में निर्दिष्ट आधुनिक (माडर्न) का अर्थ है–'' कला के क्षेत्र में एक आन्दोलन या शैली विशेष,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 1,January 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिसका लक्षण है – परम्परागत शास्त्रीय रूपों और अभिव्यक्ति प्रणाली से विच्छेद अथवा प्रयोग, निर्भीकता और रससर्जनात्मकता मौलिकता पर बल और आधुनिक विषयों पर विचार करने का प्रयास। ''5''

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ द सोशल साइन्सेज के अनुसार– आधुनिकता वहमनोवृत्ति है, जो परम्परागत (मूल्यों) की तुलना में गौण सिद्ध करती हैऔर प्रतिष्ठितय प्रचलित मान्यताओं तथा अभिनव और नवीन प्रक्रिया की अपेक्षाओ में समन्वय करती है। वर्तमान काल में बुद्धिवादका प्राधान्य है वैज्ञानिक दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप सहज विश्वनीयता लुप्त हो गयी है। आज प्रत्येक विचार को उसकी गहराई में बैठकर तर्कशीलता के निष्कर्ष पर परखा जाता चाहे वह परम्परागत रूप से कितना ही सामान्य हो। यही दृष्टिकोण पौराणिक मिथको के आधुनीकीकरण का प्रेरक रहा है।

आज हम एक युग से दूसरे युग मे प्रवेश कर रहे है इस संक्रमणकालीन स्थिति में न तो हम अतीत से कटकर आगे बढ़ सकते है न भविष्य की स्वप्निल कल्पना को छोड़कर पीछे रह सकते है ऐसी स्थिति में प्राचीन परम्पराओं के पोषक पौराणिक मिथकों को यथावत ग्रहण नहीं किया जा सकता अतः ऐसी विसंगति पूर्ण स्थिति में सामजस्य के लिए यह आवश्यक हैं कि पौराणिक मिथकों का आधुनिकीकरण किया जाय ताकि वे युगीन अर्थवता को वह करते हुए नवीन भावभूमि मे सृजनात्मकता को प्रेरित कर सकें।

वस्तुत 19वी सदी में भारतीय सांस्कृतिक और राजनैतिक परिस्थितियों में बहुत बड़ा परिवर्तन घटित हुआ जो आज भी हमारे जीवन प्रवाह में निरंतर विद्यमान है विश्व स्तर पर दो–दो महायुद्ध स्वतंत्र भारत में चीन और पाकिस्तान से हुए युद्ध देश के बुद्धिजीवियों और साहित्यकारो की युद्धाकान्त मनः स्थिति के निर्माण मे सहायक हुए है। इन सारी परिस्थितियों से हमारा जीवन अनेक विकृतियो और विसंगतियो से आकांत हो गया है। हमारी आध्यात्मिक भावना प्रधान प्रेम दया करुणा स्नेह सौहार्द, सहानुभूति गुणों सेसम्पन्न ''वसुदैव कुटुम्बकम'' की जीवन शैली खंडित हो चुकी है। और सारे उदात भाव निर्वासित जीवन जीन को विवश हुए है। भौतिक दृष्टि से उन्नति के चरम शिखर पर पहुँचकर भी सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से आज के आदमी का कद बहुत छोटा हो गया है अनास्था, अविश्वास, घृणा, संत्रास, घुटन, नैराश्य अलगाव, आधुनिक जीवन मूल्य बन कर आज हमारे सामने प्रस्तुत है। अर्थ यह है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हम विश्रृंखलित जीवन–मूल्यो का जीवन जी रहे है और यही हमारी आज की आधुनिक बोध की अभिव्याक्त वर्तमान साहित्य की किसी की विद्या मे देखी जा सकती है।

महाभारत की कथाओं को लेकर इस युग मे जो भी खंडकाप्य लिखे गये उनमे आधुनिक जीवन की समस्याओं के विभिन्न पहलुओं का बड़ी बारीकी से चित्रण किया गया है तथा उनकी अभिव्यक्ति बड़ी यर्थाथ है। महाभारत पर आधारित खण्ड काव्यों की बहुत लंबी श्रृंखला इस युग में रची गयी किन्तु विशेष जीवन्तता – आधुनिकता और प्राणवत्ता कुछ खण्डकाव्यों में है जिन्हें आज के युगीन परिवर एवं आधुनिकता बोध की दृष्टि से पाठकों के सामने लाना समीचीनहोगा।

महाभारतकेआख्यानों से संबंधित रचितखण्डकाओंमेंप्रमुखकुरुक्षेत्र, अंधायुग, महाप्रस्थान, उत्तरजय, रश्मिरथी, त्रिपथगा, सेनापति कर्ण सूर्यपुत्र, सूतपुत्र, एकलव्य, हिडिम्बा, द्रोपदी, जयभारत, तथा कौन्तेय कथा प्रमुख है।उपर्युक्त उल्लेखित खण्डकाव्यों मे से द्रोपदी खण्डकाव्य में आधुनिकता बोध वर्तमान युग में आज भी अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करता है। इस खण्ड काव्य में आधुनिकता बोध की समीक्षा इस शोध आलेख में प्रस्तुत है। द्रोपदी खण्डकाव्य नरेन्द्र शर्मा द्वारा रचित है जो सन 1960 में प्रकाशित हुआ खण्डकाव्य का प्रारम्भ द्रोपदी के स्वयंवर के बाद की घटना से होता है इस घटना से लेकर महाभारत 18 दिवसीय कौरव पांडव युद्ध में पाण्डवों की विजय तक की कथा सुविस्तृत तथा समाप्त शैली के माध्यम से पांच सर्गों में नियोजित है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 13Issue 1,January 2023,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रथम सर्ग में पात्रों का प्रतीकात्मक परिचय दिया है पांच पाण्डवों को पाँच महाभूतात्मक तत्वों का प्रतीक माना है। पंच महाभूत बिना चेतना शक्ति के निष्क्रिय ही रहते हैं। चेतना प्रवाह के लिए दोपदी की जीवनी शक्ति के रूप से परिकल्पित है।

''दोपदी जीवनी शक्ति सौंप दी गयी पाँच तत्वों को
यह कहा नियति ते पार्थ करो अब प्राप्त लुप्त सत्वों को'' 7

द्रोपदी पाण्डवों की कर्म प्रेरणा के रूप मे प्रतीकित है। साथ ही वह कृष्ण की योगिनी शक्ति भी है। पाण्डवों ने उसका वरण करके ही अपने कर्तव्यों – अधिकारों के प्रति उन्मुख हुए थे। द्रोपदी जीवनीशक्ति है, जो मुख्य प्रेरक है। मनोविश्लेषणशास्त्री युंग ने भी मानव जीवन का केन्द्रीय तत्व जीवनेच्छा को माना है। वही मनुष्य के कर्म के लिए प्रेरणा का कार्य करती है

वर्तमान समय में भौतिक संस्कृति ने (दुर्योधन) प्रवृत्तिमानव की जीवनशक्ति को निर्वासित कर दिया है। काव्य में द्रोपदी (नारीत्व) को जीवनशक्ति माना है अर्थात मानव की दया, ममता, करुणा आदि प्रवृतियों का निर्वासन दुर्योधन वृति द्वारा हो रहा है। केवल भौतिक शक्तियों के सहारे हम मानव जीवन के सच्चे मर्म को प्राप्तः कर सकत। मानव का अस्तित्व व्यर्थ है यदि वह भौतिक सुखों का दास रहता है।

''मानव की सत्ता व्यर्थ अर्थपति बनकर वह अविचारी
क्यों मनुज वासना दास, मनुज क्यो अहम्मन्य अतिचारी''8

मनुष्य जीवन यापन के लिए भौतिक रूप से सम्पन्न होना अनिवार्य है किन्तु उसे न्याय के सहयोग से अर्जित किया जाय अन्यथा वह सम्पत्ति आसुरी है जो अन्याय से अर्जित की जाए वह अनर्थ का कारण बनती है। वर्तमान समय में यह कथन सार्थक लगता है।

''जो किसी का नहीं, जिसके दास सब वह अर्थ है, टिका जिस पर सभ्यता का साज सब वह अर्थ है, किन्तु ऐसा अर्थ भी अन्याय के सहयोग से आसुरी सम्पत्ति और विपत्ति और अनर्थ है।'' 9

आधुनिक युग में नारी को केन्द्र मानकर जो काव्य लिखे गये है मूल मन्तव्य नारी महत्ता की स्थापना है। समाज में नारी को जो स्थान मिलता रहा है, उसमें नारी को पुरुष से हीन तथा भोग्या समझा जाता रहा। आधुनिक युग मे मध्यकालीन धारणाएँ बदल रही है। जिसे कवि ने इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

''आर्या भार्या, नहीं उपकरण वह न केवल मुलेच्छा,
आर्या नाही पावक तनया मूर्तिमती देवेच्छा।''10

काव्य की भूमिका में कवि ने लिखा है द्रोपती में मैंने भारतीय तेजबल का गुणगान किया है। नारी की दहन शक्ति सहन शक्ति की ओर बार–बार संकेत किया गया है। यह भी कहा गया है कि नारी के त्याग बिना धर्मराज की विजय सर्वथा असम्भव थी। द्रोपदी जितनी प्राचीन है, उतनी नवीनकहा जा सकता है कि द्रोपदी नारी शक्तिचिरन्तन प्रतीक है। जो जीवन की चारुता और जीवन संघर्ष में प्रवृत्ति हेतु नारी ही पुरुष के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। नारी के मन में जो अग्नि बीज है वहीं पुरुष को प्रेरित करे उसके कर्म पथ को संचालित करत है । नाही त्याग की महिमामयी मूर्ति है। पृथ्वी के समान सहनशील रहकर पुरूष की विजय का मूल्य चुकाने वाली है।

कवि ने नारी को मूलशक्ति कहा है, एवं नारी के बिना पुरूष को अधूरा माना है। जिसके बिना न वह सत्व पा सकता न तत्व।

खण्ड काव्य के कवि शर्मा का मत हैं कि नारी की उपेक्षा कर नर कभी भी सुख की नींद नहीं सो सकता। नारी का यदि तिरस्कार किया जाएगा तो विनाश निश्चित है। इतिहास भी इसका साक्षी है कि मनुष्य ने जब भी नारी की मर्यादाओं का उल्लंघन किया है तब–तब विप्लव हुआ है। सीता का अपहरण कर मर्यादा को खंडित किया तो उसकी स्वर्ण नगरी लंका भस्म हो गई। इसी प्रकार महाभारत भी द्रोपदी के अपमान तथा प्रतिशोध की ही कहानी है। यदि नारी को भोग्या तुच्छ समझा जाता है है यह तो यह नर की भयंकर भूल है। यदि प्रथा के रूप में नारी पृथ्वी के समान सहनशीला हैं तो होम दुहिता द्रोपदी के रूप में क्रांति की चिंगारी भी है। नारी नारायणी योगमाया बनकर नर की वरेण्या बनती है तथा कर्म की तृष्णा जागृत करने वालीध्रुवा धारणा शक्ति और धृति है।

कवि कहता भी है– ''जीवनी शक्ति के संग, सुप्त आकांक्षा मन की जात्री और – द्रोपदी जीवनी शक्ति चेतना जन धन पर पग धरती।''12

इस खण्डकाव्य में कवि ने नारी को विस्तृत भूमिकाओं में प्रस्तुत किया है. यदि वह आसुरी वृत्तियों की पोषक प्रेयसी और जनती है, वह भरण और मोहन शक्ति भी धारण करने वाली है। यह हो समाज और नर पर निर्भर है कि वह नारी को किस रूप करने को बाध्य करता है–

> नारी कृत्या, मृत्यु, जननी जामा–माया।
> क्षीर, सिन्धुधारिणी, तारिणी महाशून्य की काया।13

इस खण्ड काव्य की द्रोपदी शाश्वत नारी, जीवनी शक्ति की प्रतीक है. तथा कवि ने द्रोपदी के तेजोमय पक्ष का उद् घाटन किया है और यह भी चित्रित किया है कि द्रोपदी का नारीत्व आधुनिक जीवन राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों की उथल–पुथल, आर्थिक शोषण तथा विफलताओं एवं कुण्ठाओं की घुटन के मध्य आ अनस्थिति जीवन मूल्यों में जी रहे आज के पाण्डव रुपी पुरुष समाज को शक्तिप्रेरित चैतन्य से दीप्त कर भटकते कदमों तथा गतिमान कर सकता है या नही ?

इस खण्डकाव्य के माध्यम से कवि ने नारी को पुरुष से महान सिद्ध किया है। कविने महाभारत की कुत्ती, द्रोपदी तथा गांधारी का मूल्यांकन आधुनिक युग के नवीन परिप्रेक्ष्य में नवीन युग बोध की रूप में किया है।कवि द्रोपदी के तेजोमय स्वरूप से प्रेरणा ग्रहण कर नारीत्व के कर्तव्य के प्रति भी जागरूक करता है तो अपने अधिकारों के प्रति सुसुप्त, कर्तव्य से कुछ उदासीन आधुनिक नारी को आज के घुटन तथा विघटन से त्रस्त समाज एवंदेश के प्रति द्रोपदी की तरह तेजोमय स्वरूप में अपनी नारीशक्त को प्रकट करने का संदेश भी देता है

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. महाभारताख्यानाधृत प्रमुख खण्डकाव्यों आधुनिकता बोधः– डॉ. आलोक मिश्र पृ.सं. 16
2. आलोचक की आस्थाः– डॉ. नगेन्द्र पृ.सं. 29
3. महाभारताख्यानाधृत प्रमुख खण्डकाव्यों आधुनिकता बोधः– डॉ. आलोक मिश्र
4. नयी कविता स्वरूप एवं समस्याएंः– डॉ. जगदीश गुप्त पृ.सं. 20
5. थर्ड न्यू इंटरनेशनल डिक्सशनरी वेबस्ट वोल्यूमः–2 पृ.सं. 1452
6. महाभारताख्यानाधृत प्रमुख खण्डकाव्यों आधुनिकता बोधः– डॉ. आलोक मिश्र पृ.सं. 33
7. द्रोपदी सर्ग एक पृ.सं. 27
8. वही सर्ग एक पृ.सं. 29

9. वही सर्ग एक पृ.सं. 31
10. वही सर्ग एक पृ.सं. 67
11. वही भूमिका पृ0सं. 14–15
12. द्रापदी सर्ग पांच पृ.सं. 35–36
13. द्रापदी सर्ग पांच पृ.सं. 71